Notes

चाहे अंधियारा हो, या दूर किनारा हो,
आवाज हमें देना, हम दौड़े आएंगे ॥

चाहे गरमी सरदी हो,
या बिजली चमकती हो
आवाज हमें देना,
हम दौड़े आयेंगे ॥
चाहे अंधियारा ....

हम मंदिर जायेंगे, हम पूजा रचायेंगे,
जिनवाणी सुनने को, हम दौड़े आयेंगे ॥
चाहे अंधियारा ....

हम शिविर लगायेंगे,
अज्ञान भगायेंगे,
जिनवाणी पढ़ने को,
हम दौड़े आयेंगे ॥
चाहे अंधियारा ....

हम मुनि बन जायेंगे, निज ध्यान लगायेंगे,
आवाज नहीं देना, हम कभी नहीं आयेंगे ॥
चाहे अंधियारा ....

Scanned by CamScanner

हम मुक्ति पायेंगे
हम सिंह बन जायेंगे,
आवाज नहीं देना,
हम कभी नहीं आयेंगे॥
—चाहे आँबियारा

Scanned by CamScanner

Notes

आँखों से न देखी जाये, कानों से न सुनी जाये,
हिनौनी ये घटना, जो जग में घटाते हैं,
तो कैसा ये समाज जो विकास गीत गाता है
फूल जैसी जिन्दगी को, आग में जलाता है
क्या जमाना आ गया है आत्मा-

गाय हमारी माता है, हमको उससे नाता है
मांस विदेशों में जाता है, क्या ये हमको भाता है
तो कैसे ये हत्यारे हैं जो प्यार से फसाते हैं
फूल जैसी जिन्दगी को, आग मे जलाता है
क्या जमाना आ गया है आत्मा-

मछली जल की रानी है, जीवन उसका पानी है
हाथ लगाओ डर जायेगी, बाहर निकालो मर जायेगी
तो कैसे मछुयारे हैं, जो जाल में फसाते हैं
फूल जैसी जिन्दगी को, आग में जलाते हैं।
क्या जमाना आ गया है। आत्मा-

Scanned by CamScanner

Notes

(97)

गुड्डू एक लड्डू को पाकर,
रोने लगा कोने में जाकर।
मेरा लड्डू छोटा भाई,
बड़ा मिले तो खाऊ भाई॥

तब तक सबने लड्डू खाया,
कोने में एक बिच्छू आया।
डंक लगा तो रोया गुड्डू,
चूहे आ गये छलका लड्डू

तब गुड्डू ने सौगन्ध खाई,
हठ न करेंगे कभी भी भाई।
हम सब ने भी सौगन्ध खाई,
हठ न करेंगे कभी भाई॥

Scanned by CamScanner

NOTES

हम नन्हे मुन्हे बच्चे हैं
दांत हमारे कच्चे हैं।

झूठ कभी ना बोलेंगे
दिल ना किसी का दुखायेंगे।

जिनदर्शन को जायेंगे
निज स्वभाव को पायेंगे।

अब तो जल्दी उठेंगे
हम तो मुनि बनेंगे।

Scanned by CamScanner

Notes

चिड़िया सुन ले कुट - कुट - कुट।
तू भी खाले ये बिस्कुट ।।

भूख लगी है खाले तू।
खाकर ही उड़ जाना तू ।।

बिस्कुट मै ना खाती हूँ।
दाना पानी लेती हूँ ।।

बिस्कुट है बाजार के।
घर मै बनाओ प्यार से ।।

बड़े प्यार से खाऊँगी।
वरना भूखी रह जाऊँगी ।।

Scanned by CamScanner

तन-मन करता कौन खराब - अण्ड, मछली, माँस, शराब।

शाकाहारी रहते स्वस्थ - चिर जीवी निर्भय आश्वस्त॥

सभी धर्मों का यह है कहना - कभी किसी को दुख मत देना।

लम्बी आयु निरोगी काया - शाकाहारी की ऐसी माया॥

राम कृष्ण का यह संदेश - शाकाहार हरेगा क्लेश।

ऋषि मुनियों का कहना है - शाकाहारी रहना है॥

राम राज्य लाना है - माँसाहार हटाना है।

धर्म ध्वज पहनाना है - शाकाहार अपनाना है॥

सत्य अहिंसा का आधार - शाकाहार - शाकाहार।

हमें प्रकृति का है वरदान - शाकाहार - शाकाहार॥

जैसा खावे अन्न - वैसा होवे मन्न।

Scanned by CamScanner

नारे

एक दो एक दो - पेप्सी की बोतल फोड़ दो।

एक धक्का और दो - चॉकलेट खाना छोड़ दो॥

छोड़ दो भाई छोड़ दो - रात का भोजन छोड़ दो।

ज्ञानम-ज्ञानम-ज्ञानम आ - रागम - रागम - रागम जा॥

जैसा सिद्ध वैसा मैं - मोह उड़ाओ फुर-फुर-फुर।

टी.वी. रेडियो ने क्या किया - सबका सत्यानाश किया॥

हाय-हैलो छोड़िये - जय जिनेन्द्र बोलिये।

सब धर्मो से न्यारा है - जैनधर्म हमारा है॥

कुल्पित मिथ्याज्ञान है - शिक्षण शिविर महान है।

अटकन-चटकन दही चटाका - मिथ्याज्ञान का फोड़ो फटाका

हम बच्चों की यही पुकार - शिक्षण शिविर लगे बार-बार

Scanned by CamScanner

Notes

रन-रना-रन-रन-रन-रारा - जैन धर्म का बजे नगाड़ा ।।

जैन धर्म किसका है - जो पाले उसका है ।

अहिंसा वाणी जिंदाबाद - जिन्दाबाद-जिन्दाबाद ।।

जंगल में साँप है - रात में खाना पाप है ।

हम सब है किसकी संतान - वीर प्रभु की हम संतान ।।

अण्डा है इक माँ का लाल - मत समझो खाने का माल ।

विश्व शान्त का यह आधार - भोजन करना शाकाहार ।।

मानवता का करते नाश - अण्डा, मछली, मदिरा मांस ।

वेद पुराण और गीता सार - शाकाहार शुद्ध आहार ।।

विश्व शान्ति का यह आधार - भोजन करना शाकाहार ।

सबसे मैत्री सबका ध्यान - शाकाहारी की पहचान ।।

Scanned by CamScanner

जीवन में हम कभी न भूलें, पंच प्रभु भगवान को

बड़े जनों का आदर करना,
मात-पिता को शीश नवाना।
कार्य सदा ऐसा ही होवे
जीवन में सन्मान हो ॥ 1 ॥

जीवन में हम कभी ....

जिनवाणी की बात को सुनेंगे,
पाप भाव से दूर रहेंगे।
सत्य मार्ग पर चलें सदा ही,
मुक्तिपुरी विश्राम हो ॥ 2 ॥

जीवन में हम कभी ....

जिनवर दर्शन रोज करेंगे,
सदाचार से सदा रहेंगे।
सत्य अहिंसामय हो जीवन,
यही हमारी शान हो ॥ 3 ॥

जीवन में हम कभी

Scanned by CamScanner

7

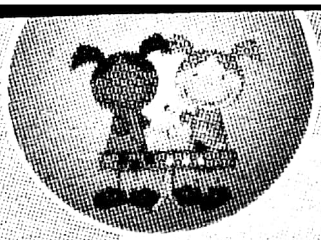

जय जिनेन्द्र

जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिये।
जय जिनेन्द्र की ध्वनि से अपना मौन खोलिये ॥ 1 ॥

जय जिनेन्द्र ही हमारा एक मात्र मन्त्र हो।
जय जिनेन्द्र बोलने से हर मनुज स्वतन्त्र हो
जय जिनेन्द्र बोलकर अपना मौन खोलिये ॥ 2 ॥

जय जिनेन्द्र .....,

पाप छोड़ धर्म जोड़ यह जिनेन्द्र देशना।
अष्ट कर्म को मरोड़, यह जिनेन्द्र देशना ॥
जाग जाग जाग चेतन बहु काल सो लिये ।॥ 3 ॥

जय जिनेन्द्र .....

हे जिनेन्द्र ज्ञान दो, मोक्ष का वरदान दो।
कर रहे हम प्रार्थना, तुम प्रार्थना पर ध्यान दो।
जय जिनेन्द्र बोलकर, बोल हृदय के द्वार खोलिये ॥ 4 ॥

जय जिनेन्द्र .....

Scanned by CamScanner

17

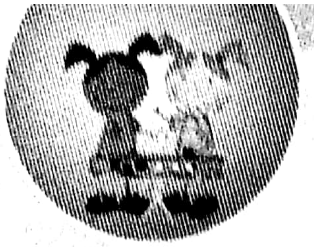

शहद

शहद अरे क्यों खाते हो ?
कितना पाप कमाते हो ?

यह मक्खी का थूक है,
तुमको लगता जूस है।

कितनी मक्खी मर जातीं,
अग्नि में ही जल जातीं।

मत खाना मानो तुम सीख,
ताली बजाओ हो गई जीत ॥

18

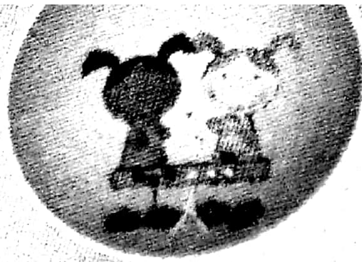

अचार

पापा गये थे बाजार,
वहाँ से लाये थे बाजार।

अचार में दिख गई इल्ली,
हंस रही मौसी बिल्ली।

मम्मी गाती गाना,
अचार कभी नहीं खाना॥

Scanned by CamScanner

जिनधर्म के नारे

- पुण्य–पाप तो कर्म हैं– वीतरागता धर्म है।
- राग–द्धेष तो कर्म हैं – वीतरागता धर्म है।
- ज्ञाता–दृष्टा आतमा – बन जाओ परमातमा।
- कुन्दकुन्द ने क्या दिया – भगवान आतमा बता दिया।
- मिथ्यात्व से क्या किया – भव सागर में डाल दिया।
- जिनवाणी ने क्या दिया – शुद्धातम दिखला दिया।
- त्रिशलानन्दन वीर की – जय बोलो महावीर की।
- आतम करता कौन खराब – राग–द्धेष और मिथ्यात्व।
- मानव जीवन की पहिचान – जिनदर्शन कर आतम जान।
- इस जीवन का क्या उद्देश्य – सम्यग्दर्शन प्राप्त करो।
- सबसे प्यारे – मुनि हमारे।
- वीतरागता पूज्य है – वीतरागता धर्म है।
- घर–घर से निकले आवाज – सत्य अहिंसा जिन्दाबाद।
- रत्नत्रय की एकता – मोक्ष मार्ग की विशेषता।
- जय हो सब अरहन्तों की – वीतरागी मुनि सन्तों की।

Scanned by CamScanner

- सम्यक्त्व ने क्या किया – भव सागर से बचा लिया।
- मानव भव की एक सफलता – सम्यग्दर्शन प्राप्त करें।
- जिनवाणी का मर्म है – वस्तु स्वभाव धर्म है।
- चिदानन्द ध्रुवधाम की – जय हो सिद्ध भगवान की।
- जैन धर्म किसका है – जो पाले सो उसका है।
- मिथ्यातम की क्या पहचान – देह आत्मा एक ही जान।
- महावीर का क्या संदेश – जियो और जीने दो।
- कहान गुरु का क्या संदेश – तेरी सत्ता जग में एक।
- महावीर के संदेशों को – जीवन में अपनायेंगे।
- कैसा हो अपना आचार – सादा जीवन उच्च विचार।
- वीर जिनेश्वर प्यारा है – चैतन्य सरोवर न्यारा है।
- वीर जिनेश्वर जहाँ–जहाँ – दिव्य ध्वनि वहाँ–वहाँ।
- बच्चे मिलकर करें पुकार – समयसार की जय जयकार।
- ज्ञाता दृष्टा आत्मा – बन जाये परमात्मा।
- **One two three four** - No Sole more and more.
- **Five six seven eight** - Open now Moksha Gate.
- **Nine ten elevan twelve** - Bhagvan Atma my self.
- **Thirteen fourteen fifteen sixteen** - My sole Ever Green.

Scanned by CamScanner